AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

सौ साल के जोश, उमंग और जज्बे को सलाम...

लखनऊ विश्वविद्यालय का शताब्दी समारोह जोश, उमंग और जज्बे के नए आयाम के साथ रंग में आने लगा है। सात विशेषीय समारोह के दूसरे दिन शुक्रवार को परिसर में जोश, विज्ञान, कला, साहित्य, खेल और योग जैसे विभिन्न क्षेत्रों के उत्सव सजने शुरू हो गए। दिन की शुरुआत योग शिविर के साथ लोगों को निरोग बनाने के संदेश के साथ हुई तो इसके बाद मंदान पर वर्तमान और पूर्व छात्रों ने बास्केटबॉल और वॉलीबॉल की प्रतियोगिताओं में दो-दो हाथ किए। उत्सव का यह त्रिस्तरीय विज्ञान, कला और साहित्यिक उत्सव के साथ उफान पर आता नजर आया। शाम को हुई सभागीय की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

भावपूर्ण प्रसंगों से राममय सांस्कृतिक मंच

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी उत्सव में शुक्रवार को दिल्ली के कलाकारों ने रामलीला के प्रमुख प्रसंगों का मंचन कर पूरा राम की महिमा बखानी।

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के दूसरे दिन संस्कृति संध्या का आयोजन किया गया। शाम को रामलीला का मंचन किया गया।

राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक लगभग 40 प्रसंगों के साथ किन्नु संवाद और देवेश अनुर संवाद की जीवंत प्रस्तुति मंच पर की गई, तो पूरा प्रांगण राम के जयकारों से गूंज उठा। बाल उर्वी शत्रुघ्न अवध में जन्म लेना... और ठुमक चलत रामचंद्र , बाजत पैजनिया...जैसी रचनाओं के बीच पूरे शाम गुलजार हुई।

शुक्रवार को दिल्ली रामलीला संस्कृति कला संस्था के कलाकारों ने रामलीला के दृश्य प्रस्तुत किए। शताब्दी समारोह की दूसरे दिन शाम को सुनियोजित ढंग से जुड़ी पूर्व और मौजूदा कई हस्तियां मौजूद रहीं। रामलीला की शुरुआत अयोध्या से फिर समाज में आवार के रूप में जन्म से होती है। अगले प्रसंगों में लक्ष्मण-करेका द्वारा दिखाया तो पूरा परिसर राम के जयकारों से गूंज उठा। धनुषयज्ञ होते ही भगवान परशुराम क्रोधित होते हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में सांस्कृतिक संध्या में शुक्रवार को रामलीला का मंचन किया गया

शुक्रवार को शताब्दी समारोह की संस्कृतिक संध्या में कलाकारों ने जब पुष्पवाटिका की आज्ञा पाकर श्रीराम के धनुषभंग करके को द्वारा दिखाया तो पूरा परिसर राम के जयकारों से गूंज उठा। धनुषभंग होते ही भगवान परशुराम क्रोधित होते हैं। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को दिखाया कलाकारों ने जब पुष्पवाटिका की आज्ञा पाकर श्रीराम के धनुषभंग करके द्वारा दिखाया तो पूरा परिसर राम के जयकारों से गूंज उठा। धनुषभंग होते ही भगवान परशुराम क्रोधित होते हैं।

राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक लगभग 40 प्रसंगों के साथ किन्नु संवाद और देवेश अनुर संवाद की जीवंत प्रस्तुति मंच पर की गई, तो पूरा प्रांगण राम के जयकारों से गूंज उठा। बाल उर्वी शत्रुघ्न अवध में जन्म लेना... और ठुमक चलत रामचंद्र , बाजत पैजनिया...जैसी रचनाओं के बीच पूरे शाम गुलजार हुई।

शुक्रवार को दिल्ली रामलीला संस्कृति कला संस्था के कलाकारों ने रामलीला के दृश्य प्रस्तुत किए। शताब्दी समारोह की दूसरे दिन शाम को सुनियोजित ढंग से जुड़ी पूर्व और मौजूदा कई हस्तियां मौजूद रहीं। रामलीला की शुरुआत अयोध्या से फिर समाज में आवार के रूप में जन्म से होती है। अगले प्रसंगों में लक्ष्मण-करेका द्वारा दिखाया तो पूरा परिसर राम के जयकारों से गूंज उठा। धनुषभंग होते ही भगवान परशुराम क्रोधित होते हैं।

श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान राम के जन्म की खुशियों के माहौल को मंच पर प्रस्तुत किया। इसके बाद कलाकारों ने भी कौशल्या की गोद से कुटकर राजा दशरथ की गोद में जाते हुए बाल राम को दिखाया। ऋषि-मुनियों के आश्रम में भगवान राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को दिखाया। कलाकारों ने जब गुरु विश्वामित्र को आज्ञा पाकर श्रीराम के धनुष भंग करने की प्रस्तुति दी तो फिर मुक्ताकाशी प्रांगण जयकी राम के जयकारों से गूंज उठा। धनुष भंग होते ही परशुराम क्रोधित हो जाते हैं, लेकिन जब उनको राम के अवतार के बारे में पता चलता है तो फिर वे वापस चले जाते हैं। रामचरित मानस की संगीतमयी चौपाइयों के साथ श्रीराम की जीवन यात्रा के विभिन्न प्रसंगों को कलाकारों ने बखूबी प्रस्तुत किया। रामलीला में चार चौपाल ने राम, राम ने लक्ष्मण, संदेश ने भरत, सुमित ने शत्रुघ्न, सोनम बाबरा ने सीता, हुए विभूती ने दशरथ, अरुण ने विश्वामित्र का जीवंत किरदार निभाया। इससे पहले कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने अपने परिवार के साथ दीप जलाकर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की।

प्रदर्शनी में दिखीं शिल्प और कला की नायाब कलाकृतियां

लखनऊ। महाराजाओं प्रांगण के पास स्थित गैलरी में शिल्प एवं कला महाविद्यालय की ओर से प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें शिल्पकार व मूर्तिकार द्वारा तैल रंगोत्र, रेखाचित्रण, कुटीक के कार्य, बिन्दाई, धातु कला, मूर्तिकला व साज्जा कलाकृतियां के विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनी लगाई गई। शिल्पकार रामेश्वर, अनुराधा गौर व नीतीश, बैजनाथ सिंह, अनुराधा गौर व अमरनाथ ने भी प्रदर्शनी में अपनी लाई मूर्तियां को कलाकृतियों की कलियों से अलग कराया। बीबीए, बीएफए, एमएफए के छात्रों द्वारा तैयार पेंटिंग काफी सराही गई। वहीं, पूर्वी तारा सांस्कृतिक संस्था से पहले इंटरनेशनल एनीमेशन का भी ऑनलाइन आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के कई कलाकारों व लोगों ने पूर्व छात्रों की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया।

योग से दिया निरोगी रहने का मंत्र

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी उत्सव के तहत शुक्रवार को योग शिविर के माध्यम से लोगों को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा निरोगी रहने का मंत्र दिया गया। शिविर का उद्घाटन कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने किया।

शताब्दी समारोह के दौरान दो एमओयू पर हस्ताक्षर

लखनऊ। शताब्दी समारोह के दौरान दो एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। लखनऊ विश्वविद्यालय व लखनऊ मेट्रो रेल कारपोरेशन के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय और डॉ. भरत शाह (निदेशक, निफ्ट) के बीच हस्ताक्षरित किया गया। समारोह प्रांगण का उद्घाटन राष्ट्रीय ध्वज और अंतरराष्ट्रीय ध्वज पर दीपों संजवाने के बीच सारथेश और अमरनाथ को प्रोत्साहित करने के साथ किया गया। इसके बाद उन्होंने बताया कि किस तरह बहु क्षेत्रीय से समाजशास्त्री की दशा से नवाब आर्किटेक्चरल लखनऊ का गए थे।

- सौजन्य: जागरण प्रो. आलोक कुमार राय ने किया। उन्होंने बताया कि लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना 1921 में हुई। इसके उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊंचे संस्कारों के बीज बोकर और समाज में सेवा के भाव को जगाना था। इसके बाद कई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से जुड़ा। वो, जो उन्होंने विश्वविद्यालय के कार्यों को आगे बढ़ाया। इसके बाद उन्होंने बताया कि विज्ञान, कला, साहित्य, खेल और योग जैसे विभिन्न क्षेत्रों के उत्सव सजने शुरू हो गए। दिन की शुरुआत योग शिविर के साथ लोगों को निरोग बनाने के संदेश के साथ हुई तो इसके बाद मंदान पर वर्तमान और पूर्व छात्रों ने बास्केटबॉल और वॉलीबॉल की प्रतियोगिताओं में दो-दो हाथ किए। उत्सव का यह त्रिस्तरीय विज्ञान, कला और साहित्यिक उत्सव के साथ उफान पर आता नजर आया। शाम को हुई सभागीय की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

वर्तमान छात्रों के आगे सरकार तक झुक गई

कुछ यादें कुछ किस्से

कमलेश त्रिवाठी

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमए की पढ़ाई पूरी कर 1964 में लखनऊ विश्वविद्यालय में एलएलबी में दाखिला लिया। 31 अगस्त 1965 में लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ का अध्यक्ष चुन गया। इसी साल नवंबर यहां में छात्रों का एक आंदोलन शुरू हुआ। पाठ्यक्रमों की कीटों बढ़ाने से लेकर कई मुद्दे उठाए गए। विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन मुद्दों को लेकर सरकार से बात करने को कहा। हम आज एक इंजिनियरिंग कॉलेज तकालीन शिक्षा मंत्री बैलाल प्रकाश से विधानसभा में मिले। वहां फिलहल रही। हम जैसे ही विधानसभा के गेट तक पहुंचे वहां गिरफ्तारी कर ली गई। हमारे आंदोलन को दबाने के लिए विश्वविद्यालय में साइन डॉर्म की घोषणा कर दी गई। विश्व विद्यालय बंद हो गया। सभी जेल जेल में थे। इसी बीच तकालीन कुलपति ने पत्र भाकर कि विज्ञान

छात्र आंदोलनों में शामिल नहीं होते हैं, साइंस फैकल्टी में कक्षा से शुरू करने की घोषणा कर दी। यहां बीएससी की दो सालाओं ने आंदोलन की कमान संभाली। उन्होंने कमान ने बताया कि आंदोलन शांतमय रहे। हम अपना एक प्रतिनिधि मंडल लेकर तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह से मिले। उन्होंने कहा कि हमारे रेश जेल में हैं और हम कक्षा कर रहे हो। उनकी बात का असर था की विश्वविद्यालय दोबारा बंद हो गया। छात्रों की रिहाई के बाद सरकार को झुकना पड़ा। आचार्य कृपलानी को बुद्ध जेल में आकर छात्र नेताओं के साथ समझौता करना पड़ा। आखिरकार छात्रों की जीत हुई। यह विश्वविद्यालय की दो दन है कि 33 वर्ष की उम्र में जनता पार्टी की सरकार में प्रदेश में मंत्री बनने का अवसर मिला।

लखनऊ/बाराबंकी, पूर्व मंत्री और लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र

...तब छात्रों के आगे सरकार तक झुक गई

लखनऊ यूनिवर्सिटी का जर्नल भी प्रकाशित हुआ

डॉ. यशोदर त्यागी

ये बताते हैं कि अंग्रेजी के साथ हिंदी और उर्दू में भी लेख प्रकाशित होते थे। अंग्रेजी विभाग के तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सीजे आर्थर की संपादकीय जिम्मेदारी सौंपी गई। जर्नल अंग्रेजी विभाग के रीडर डॉ. यशोदर त्यागी के निर्देशन में छपा। इसमें देश-विदेश के प्रसिद्ध लेखकों के लेख छपे

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष

THE PIONEER PAGE 4

LUCKNOW UNIVERSITY CENTENARY CELEBRATIONS

Yoga camp, literary fest mark second day

PNS ■ LUCKNOW

The second day of Lucknow University centenary celebrations kicked off with a yoga camp organised at Shivaji Stadium on Friday. The yoga camp was organised by Amarjeet Yadav from the department of Yoga. Participants were trained to perform 'tadasana', 'dhanurasana', 'bhujangasana', 'pawanmuktasana', 'ardhamatsyandrasana', 'padmasana', 'nadishodhan' etc.

Yadav said yoga is useful for life and beneficial for holistic way of life, especially in the times of pandemic.

Science festival was organised in front of the department of Hindi by Vibuti Rai from the department of Geology. Noted historian Ravi Bhatt was the chief guest on the occasion.

Vice-Chancellor AK Rai, along with the dean of Faculty of Science Tripta Trivedi and heads of departments inaugurated the programme. Rai recalled many well-known names of the former faculty members who contributed a lot in the field of science.

Ravi Bhatt talked about the historical development of LU and how the name of Badshah Bagh, the place where LU exists now, was coined. He also provided historical structured details of the university.

The Food and Science Technology department displayed quick adulteration tests for food items such as honey and milk products while the engineering faculty made a sanitisation tunnel and Lucknow Public College demonstrated the use of drone.

Meanwhile, the literary fest at Lucknow University saw students reciting poems of great poets associated with the institution on the second day under centenary celebrations. Theatre activist Salim Arif, who conceptualised the programme, said the idea was to connect the past with the present. He said at the outset, he was doing a small journey of the poets such as Kavi Pradeep, Kailash Vajpayee, KP Saxena, Ali Sardar Jafri, Raghuvir Sahai, Hasan Kamal and Manohar Shyam Joshi who have been the students of LU and later went on to become prominent poets of the country.

"For me, it has been a kind of workshop because this is a tribute by the contemporary students to the great poets. There was no fun in me doing my play and the idea was that these students should be taken on this journey because then it would reach 200 or more students and they will get curious, get involved and find ways to reach out to the illustrious past," he said. He added that some of these students knew the poets, others found out while the rest are still struggling, but the intention was to involve them in this exercise.

About his own journey, Arif said he learnt a lot from Lucknow which is marked by cynicism and irreverence, the characteristic features of the city. "I studied at Lucknow University between 1977 and 1980 and my subjects were Mathematics, English and Psychology. Within a year, I lost interest in academics and got involved in arts and cultural activities before moving to National School of Drama at New Delhi and then worked as a designer for many shows such as 'Bharat Ek Khoj', 'Mirza Ghalib' etc," he said.

He recalled teachers such as Raj Biasria from English Department, litterateur Yogesh Praveen and poet Kunwar Narayan, known as institutions in themselves.

"The assimilation of things, the perspective and the ability to rise above mundane to a more layered way of thinking happened because of my interactions with these 10-12 people and the conversations I designed for 'Bharat Ek Khoj' was a result of that," he said, adding, "Every country he, (Nehru) visited, he visited it. I was in New Zealand, Australia or Singapore, people ask me within five minutes, 'Are you from Lucknow? *Lucknow chhupaye nahi chhupta*.' Arif said LU made his mind like a sponge which could absorb a variety of things.

Yogesh Praveen, who was the chief guest on the occasion, talked about the ambience of the university in the late 50s and also about the history of Urdu. "Urdu came up in the south, became a youth in Delhi and was decorated as a bride in Lucknow. The fall of Delhi in the first war of Independence brought many of the Urdu poets to Lucknow because it was patronised by the nawabs. Those poets first came to Faizabad and then Lucknow," he added.

SPORTS FEST KICKS OFF

Shatabdi Sports Festival was inaugurated as a part of Lucknow University's centenary celebrations by former UP minister and ex-president of LU Students Union Arvind Singh Gope, along with Vice-Chancellor AK Rai. Both of them played basketball.

A game was played between Lucknow University alumni and current students. Ashish Singh scored seven points three times while Alok Shukla twice. Captain Ashutosh Shukla and Anoop also put their best foot forward. The alumni won 32-20.

The second match was inaugurated by LU's examination controller AM Saxena. It was played between the alumni and current student. This match was also won by the alumni. Among the current students, Mansi Pratapsah was brilliant as also Nikita and Pooja. In the volleyball match, the first two sets were won by the current students 25-22 and 26-24 while the third set by alumni 27-25. The final and decisive match was also won by alumni by a 25-16 margin after winning the fourth set 25-23.

RASHTRIYA SAHARA PAGE 3

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के दूसरे दिन योग शिविर, एकालाप के जीवंत मंचन सहित कई विविध आयोजन। फोटो : मुनमून ठाकरी

योग समग्र जीवन पद्धति के लिए उपयोगी

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के दूसरे दिन योग शिविर, साइंस फेस्ट, रामलीला का जीवंत मंचन, ऑनलाइन दृश्य कला प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

लखनऊ (एसएनबी)। लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी उत्सव में शुक्रवार को समग्र व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत विकास के लिए शताब्दी विकास कार्यालय सेंटिलन, लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रातः सात बजे से योग शिविर का आयोजन किया गया। योग शिविर में उपस्थित के मुख्यातिथि प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि योग योगेश के लिए उपयोगी एवं समग्र जीवन पद्धति के लिए उपयोगी है। आलोक कुमार राय ने कहा कि योग योगेश के लिए उपयोगी एवं समग्र जीवन पद्धति के लिए उपयोगी है। योग शिविर में विशेष व्यक्तियों के रूप में प्रो. विनोद सिंह, प्रो. विनोद कुमार, प्रो. आलोक कुमार राय, प्रो. एस. के. मिश्रा, प्रो. एस. के. सिंह, प्रो. अनुराग, प्रो. अनिल कुमार, प्रो. अनिल कुमार, प्रो. अनिल कुमार